Impact Factor – 6.261 ISSN – 2348-7143
INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION

RESEARCH JOURNEY

INTERNATIONAL E-RESEARCH JOURNAL

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

January - 2019 SPECIAL ISSUE- 101

Trends in Translation Study

मराठी अनुवादित साहित्याचे प्रवाह

हिंदी अनुवाद की प्रवृत्तियाँ

Guest Editor :
Dr. Arun Nikumb
Act. Principal,
S.S.G.M. College, Kopargaon
Tal. Kopargaon Dist. Ahmednagar

Chief Editor :
Dr. Dhanraj T. Dhangar
Yeola, Dist. Nashik (MS) India.

Executive Editors :
Mr. S.S. Deokar
Dr. R.D. Kanade
Dr. B.R. Shendage
Mr. B.A. Rohakale
Dr. R.R. Varde
Mr. R.M. Dahe
Dr. Y.V. Dane
Mr. G.Y. Shaikh

This Journal is indexed in :
- UGC Approved Journal
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmos Impact Factor (CIF)
- Global Impact Factor (GIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)
- Indian Citation Index (ICI)
- Dictionary of Research Journal Index (DRJI)

SWATIDHAN PUBLICATIONS

Scanned with OKEN Scanner

31	अनुवाद और तकनीकी भाषा	डॉ.व्ही.डी.सूर्यवंशी	122
32	अनुवाद संकल्पना, स्वरूप तथा रोजगार.के अवसर	डॉ.प्रमोद परदेशी	125
33	डॉ.नरेंद्र मोहन कलंदर नाटक का अनुवादपरक तुलनात्मक अध्ययन	प्रा.बाबासाहेब गव्हाणे	129
34	भारतीय साहित्य और अनुवाद	डॉ. नानासाहेब जावळे	133
35	सांस्कृतिक नवजागरण में अनुवाद की उपादेयता	डॉ.मूपेंद्र निकाळजे	136
36	हिंदी साहित्य में अनुवाद का विकास	प्रा. श्रीमती वंदना देशमुख	140
37	हिंदी नवजागरण और अनुवाद	डॉ. मिलिंदराज बुक्तरे	143
38	हिंदी अनूदित साहित्य समस्याएँ तथा समाधान	डॉ. अनिता वेताळ-अत्रे	146
39	२१ वीं सदी में अनुवाद की आवश्यकता	डॉ.विष्णु राठोड	149
40	अनुवाद साहित्य का स्वरूप, संकल्पना और रोजगार के अवसर	प्रा.अनिता पाटोळे	152
41	अनुवाद समाधान और समस्याएँ	डॉ. ऐनुर एस. शेख	155
42	हिंदी अनूदित नाटक साहित्य-परम्परा	डॉ. जितेंद्र पाटील	158
43	हिंदी अनूदित साहित्य समस्याएँ तथा समाधान	डॉ. मेनका त्रिपाठी	161
44	हिंदी साहित्य और फिल्म रचना	डॉ. एस. बी. दवंगे	165
45	साहित्यिक अनुवाद की समस्याएँ	प्रा. आर. एन. वाकळे	167
46	हिंदी अनुवाद का स्वरूप ओर रोजगार क्र अवसर	डॉ. शरद कोलते	170
47	हिंदी काव्यानुवाद की समस्याए एवं समाधान	डॉ. संजय महेर	173
48	विज्ञापन की भाषाऔर अनुवाद	प्रा. रविंद्र ठाकरे	175
	मराठी विभाग		
49	अनुवाद एक ज्ञानग्रहण प्रक्रिया	डॉ. बी.डी.गव्हाणे	179
50	इतर भाषेतून मराठी अनुवादित झालेल्या साहित्यकृती आकलन व आस्वाद (डॉलर बहु व 'द ब्रॉय इन द स्ट्राईप्ड पायजामाज)	वंदना सोनवले	182
51	अनुवाद स्वरूप ,संकल्पना ,व्याप्ती	मधुरा मते	186
52	भाषांतर रुपांतर, अनुवाद नाट्यलेखन	डॉ. बाबासाहेब शेंडगे	189
53	भाषांतर संकल्पना	प्रा. ज्ञानेश्वर तिखे	193
54	अनुवाद संकल्पना, स्वरूप व व्याप्ती	संगीता वाकोळे	196
55	अनुवाद संकल्पना, स्वरूप व व्याप्ती	प्रा. भास्कर मोरे	202
56	श्री भगवद्गीता आणि मराठी गीताई : एक अनुबंध	डॉ. मधुकर मोकाशी	206
57	मराठी भाषेतून इतर भाषांमध्ये अनुवादित झालेल्या साहित्यकृती : आकलन आणि आस्वाद	प्रा.सुरेश नजन	212
58	भाषांतराचे प्रकार –भाषांतर, अनुवाद, रुपांतर	प्रा. रावसाहेब दहे	216
59	भाषांतर आणि इतर सामाजिक क्षेत्रे	डॉ. मेघराज औटी	219
60	जी.ए.कुलकर्णी यांनी अनुवादित केलेल्या कथांमधील मानवी वृत्ती-प्रवृत्ति –एक वेध	सुनीता अत्रे	221
61	अनुवाद स्वरूप व संकल्पना	डॉ. संतोष देशमुख	226
62	अनुवाद स्वरूप,संकल्पना व व्याप्ती	भाग्यश्री माताडे व डॉ. गजानन जाधव	230
63	इतर भाषांमधून मराठी अनुवादीत झालेल्या कादंबऱ्या एक आकलन	डॉ. रावसाहेब ननावरे	234
64	पु.ल.देशपांडे यांची भाषांतरीत वं रुपांतरीत नाटके	प्रा. ए. बी. उगले	241
65	इतर साहित्यातून अनुवादितझालेल्या कलाकृतीचे आकलन आणि आस्वाद.	प्रा. श्रीमती रसाळ एस.डी	245
66	इतर भाषांमधून मराठीत अनुवादित झालेल्या साहित्यकृती	वैशाली गायकवाड व डॉ. विजया तेलंग	249

Scanned with OKEN Scanner

'RESEARCH JOURNEY' International E- Research Journal
Impact Factor - (SJIF) - 6.261, (CIF) - 3.452(2015), (GIF)-0.676 (2013)
Special Issue 101 : Trends in Translation Study
UGC Approved Journal
ISSN : 2348-7143
January-2019

सांस्कृतिक नवजागरण में अनुवाद की उपादेयता

डॉ. भूपेंद्र सर्जेराव निकाळजे
हिंदी विभाग
राधाबाई काळे महिला महाविद्यालय अहमदनगर

सारांश -

नाटयानुवाद से हिंदी नाट्य साहित्य और रंगमंच समृद्ध हुआ है। अनुवाद भाषायी सेतु है जो एक दूसरे से जोडने का काम करता है, वहाँ की सांस्कृतिक सभ्यता का परिचय अनुवाद के कारण ही होता है, लेकिन नाटयानुवाद करते समय अनेक समस्याओं का सामना अनुवादक को करना पडता है, क्योंकि नाटक पढा नहीं जाता व रंगमंच पर खेला जाता है, इसलिए नाटक का अनुवाद यह कठिन माना जाता हैं। वर्तमानयुग में अनुवाद की महत्ता और उपयोगिता केवल भाषा और साहित्य तक ही सीमित नहीं है। वह हमारे जीवन के साथ भी है, वह हमारी सांस्कृतिक ऐतिहासिक और राष्ट्रीय एकता का माध्यम हैं।

शब्द संकेत – सांस्कृतिक नवजागरण में अनुवाद का योगदान दृष्टव्य हैं।

प्रस्तावना -

आज हम देखते हैं, कि मराठी भाषा को हिंदी ने एवं हिंदी को मराठी भाषा ने साहित्य के स्तर पर काफी उन्नत बनाया है, यह अनुवाद के कारण ही संभव हो गया है। मराठी तथा हिंदी भाषा का स्नेहबंध आरंभ से ही रहा है। दोनों भाषाओं का जन्म संस्कृत से हुआ है। यही कारण है कि जन्मकाल से ही उनका आपस में आदान प्रदान चलता रहा हैं।

विषय प्रवेश -

साहित्य की विविध विधाओं में अनुवाद यह हो रहा है, जिसका परिणाम यह दिखाई देता है कि प्रांतिय भाषाओं का साहित्य आज भारतीय साहित्य बन गया हैं। विचार भाव तथा ज्ञान को एक भाषा से दूसरी भाषा में अंतरित करने की प्रक्रिया अनुवाद हैं। अनुवादक को मूल लेखक की अनुभूतियों की गहराइयों तक पहुँचकर उसकी संवेदनाओं को वगैरे बाधित किए हुए उतने ही अभिव्यक्ति कौशल के साथ लक्ष्य भाषा में होना नितांत आवश्यक हैं। डॉ. कैलाशचंद्र भाटिया लिखते है, "साहित्यिक कृति अनुवाद में विषय के साथ शैली का भी ध्यान रखना होता हैं। अनुवाद को मूल कृति की सर्जन प्रक्रियाओं से गुजरते हुए उसके सत्य और संगीत को जिंदा मोती की तरह रखना पडता है कि वह जीवित बना रहे और उसकी उपरी यमक तथा आंतरिक दीप्ति वैसी बनी रहे जैसी पहले थी।" [१] स्पष्ट है कि अनुवाद यह यह पुनर्सृजन प्रक्रिया हैं।

भारतीय साहित्य में मराठी साहित्य का अनन्यसाधारण महत्त्व है। मराठी के समृद्ध साहित्य का अनेक भाषाओं में अनुवाद हो रहा हैं। मराठी का नाटय साहित्य अत्यंत समृद्ध है। मराठी कथा साहित्य की अपेक्षा नाटय साहित्य का विशेष रुप से अधिक अनुवाद हुआ है। मराठी नाटय साहित्य हिंदी की तुलना में प्रगतिशील है। मराठी के विजय तेंदूलकर, वसंत कानेटकर, ना.धो. ताम्हणकर, जयवंत दळवी, प्र.के.अत्रे, गो.पु. देशपांडे, अरविंद गोखले, ह.श. देशपांडे, विष्णु गणेश देशपांडे, संजीव शेंडे, श्रीमती लीला फणसलकर, लेखा पिंपलापुरे, कुसूम तांबे आदि के नाटकों के हिंदी में नाट्यानुवाद हुए हैं। हम देखते है, "एक ओर हिंदी प्रदेश बंगला भाषी प्रदेश से जुडा है तो दूसरी ओर मराठी भाषी प्रदेश से जुडा हैं। इसी कारण हिंदी में आरम्भ से ही मराठी और बंगला भाषा के

Scanned with OKEN Scanner

अनुवाद मिलते है। स्वयं भारतेन्द्र ने मराठी भाषा से एक उपन्यास का अनुवाद किया था।"[२] युगदृष्टा भारतेंदु हरिश्चंद्र देश और समाज की उन्नति के लिए हिंदी आवश्यक समझते थे। इसलिए वे विभिन्न भाषाओं के श्रेष्ठ ग्रंथों के ही हिंदी में अनूदित करने के पक्ष में थे?"[३] अनुवाद करने से सांस्कृतिक मूल्यों का आदान प्रदान संभव होता हैं। अनुवाद एक ऐसा माध्यम है जो इतिहास के विभिन्न मोंडो पर सांस्कृतिक नवजागरण का कारण बना हैं। मराठी से हिंदी में अनुवाद करने वालों के भाषा की दृष्टि से तीन वर्ग दिखाई देते हैं - १. मराठी मातृभाषिक २. हिंदी मातृभाषिक ३. मूलतः मराठी मातृभाषिक किन्तु शिक्षा संस्कार, निवास आदि के कारण प्रायः हिंदी भाषिक"[४] मराठी भाषी हिंदी अनुवादको द्वारा किये गये अनुवाद कार्य का स्वरुप बहुआयामी है। भारतीय नाटयसाहित्य में बंगला नाटय साहित्य के उपरान्त मराठी नाटकों की चर्चा होती है। इसलिए मराठी के लगभग सभी प्रतिनिधि नाटककारों के नाटकों को हिंदी में अनूदित किया है। साहित्य जगत में ही नहीं भारतीय नाटय साहित्य में मराठी नाटय-साहित्य अपनी स्वतंत्र एवं विशेष पहचान रखता हैं। मराठी नाटक आरंभ से ही इतने समृद्ध रहे है कि उनके देशी भाषाओं के साथ-साथ विदेशी भाषाओं में भी अनुवाद हुए है। हिंदी साहित्य में मराठी अनूदित नाटकों का अपना एक महत्त्व है, हिंदी नाटकों को एक नयी दिशा देने का कार्य अनुवादकों के द्वारा भी हुआ है।

कुछ प्रसिद्ध मराठी नाटककार एवं उनके अनूवादित हुए नाटक एवं अनुवादकार कुछ इस तरह है।

१. प्र. के. अत्रे - 'लग्नाची बेडी' (विवाह का बंधन)- डॉ. जगदीशचंद्र जैन द्वारा अनूवादित(१९५८)
२. वसंत कानेटकर - 'अश्रूंची झाली फुले' (आँसू बन गये फुल) श्रीमती सुनीता कट्टी द्वारा अनूवादित (१९८०)
३. खानोलकर चि.त्रं. 'एक शून्य' बाजीराव - कमलाकर सोनटक्के द्वारा अनूवादित (१९६८)
४. रा.ग. गडकरी 'एकच प्याला' (एक ही प्याला) फरात्रा मुन्शी द्वारा अनूवादित (१९२७)
५. मधुकर तोरडमल - काळे बेट लाल बत्ती (कृष्ण द्वीप) सरोजिनी वर्मा द्वारा अनूवादित (१९५३)
६. पु.ल. देशपांडे - 'तुझे आहे तुजपाशी (कस्तुरी मृग) राहूल बारपुते द्वारा अनूवादित (१९६०)
७. वि.वा. शिरवाडकर - विदूषक (विदूषक) १९७३ में अनूदित ।

स्वातंत्र्योत्तर अनूदित नाटकों में सार्वधिक संख्या और प्रभाव मराठी नाटकों का है। कथ्य और शिल्प की दृष्टि से मराठी नाटक अपने आप में वैशिष्टयपूर्ण है। लेकिन जब वे नाटक हिंदी भाषा में अनूदित होकर आते है, तो नाटक की भाषा, वातावरण की सृष्टि, परिवेश की रक्षा, वाणी की सक्रियता अभिनय के साथ मौखिकता, लहजा, को विशेष रुप से ध्यान देना होता है, क्योंकि अनुवाद करते समय मराठी भाषा की पृष्ठभूमि और हिंदी प्रदेशों की भूमि यह भिन्न होती है, रीतिरिवाज परंपराएँ भी भिन्न होती हैं। इसलिए कभी कभी शब्द या पदार्थो में भी परिवर्तन हमें दिखाई देता हैं।

नाटयानुवाद -

मराठी –

" सुनंदाबाई, दुभत्याच्या कपाटात शिरा ठेवलाय, म्हणाल तर तुपावर परतुन देतो- म्हणजे द्यायला सांगतो। पण जयसिंहाकडे मारक्या म्हशी सारखे पाहत मला वाटत शिरा तुमच्या पुरताच असावा।"[४]

हिन्दी –

"सुनंदा बीबी' दूध की अलमारी में आपके लिए गाजर का हलवा रखा है। क्या उसे गरम कर हूँ, पानी देने के लिए कहूँ (जयसिंह की ओर गुस्से से देखता हुआ) पर मुझे लगता है कि हलवा सिर्फ एक आदमी के लिए ही है।"[५]

Scanned with OKEN Scanner

इस अनुवाद में 'शिरा' के लिए गाजर का हलवा शब्द प्रयुक्त किया है। 'शिरा' से तात्पर्य होता है, सुजी का हलवा। शिरा और गाजर का हलवा दोनों भिन्न हैं। इसलिए नाटक का अनुवाद यह कठिन माना जाता है, क्योंकि वह प्रत्यक्ष रंगमंच पर खोला जाता है, ऐसी स्थिति में अनुवादक अपने ज्ञान ओर भाषा के माध्यम से नाटक का अनुवाद वह करता है, आज हिंदी भाषा में मराठी नाटकों की संख्या अनुवादित रुप में काफी है, लेकिन इन सब में से प्रयोगधर्मी नाटककार के रुप में विजय तेंडूलकर को पहचाना जाता है, उनके नाटकों ने मराठी रंगमंच को एक नयी दिशा यह दी है, उनके कथ्य विषय नये होने के कारण उन्हें नाटक का शिल्प भी नया अपनाना पडा। उन्होंने अपने नाटकों के माध्यम से सामाजिक सच्चाई, राजनीतिक बर्बरता के साथ मानवीय मन की क्रुरता का यथार्थ चित्रण किया है।'' ''तेंदूलकर अपने नाटकों के चरित्र अपने आस पास के जीवन से उठाते हैं। मध्य वर्ग के लोग, उनका जीवन, इनका व्यवहार और उनका एक दूसरे से रिश्ता उनके नाटकों की प्रमुख थीम है।''[६] ऐसे उपेक्षित लोगों के चरित्र पर प्रकाश डालने का प्रयास यह तेंदूलकरजी ने किया है, विजय तेंदूलकर के नाटको का हिंदी में अनुवाद हुआ है सरोजिनी वर्मा ने 'खामोश अदालत जारी है' यह नाटक कुमारी माता और भ्रूण हत्या जैसे गंभीर सामाजिक विषय को लेकर चिंता जताई है। मूल नाटक यह 'शांतता कोर्ट चालु आहे' इस नाम से पहचाना जाता है, जिसमें समाज के प्रतिष्ठित लोगों का चेहरा स्पष्ट किया हे। टाइम पास के लिए वे झूटमूठ का मृकदमा चलाने का खेल खेलते है। अभियुक्त के रुप में लीला बेणारे को अदालत के कटघरे में खडा किया जाता है और उस पर भ्रणहत्या का आरोप बनाना आज के मनुष्य की प्रवृत्ति बन गयी है इस ओर नाटककार संकेत करते है।

'पाहिजे जातीचे' इस नाटक का अनुवाद डॉ. कुसूम कुमार ने 'उसकी जात' नाम से किया है। प्रस्तुत नाटक के माध्यम से तेंदूलकर ने शिक्षित बेकारों की समस्या को शिक्षित बेकारों की समस्या को उठाया है, उनकी परिस्थितियों से समाज को दिखाया है, साथ ही शिक्षा संस्थाओं की दयनीय अवस्थाओं का भी चित्रण उन्होने अपने इस नाटक में किया हे। ग्रामीण स्तर पर शिक्षा कैसी है, तथा शिक्षा संस्थाओं में स्थानीय राजनीति कैसे हस्तेक्षेप करती है, उसे स्पष्ट किया हैं। ''कॉलेज सचमूच ही एक पुराने तबेले के अहाते में बना हुआ है सरकारी डेयरी की जमीन.. चारों तरफ खडी की हुई कच्ची दीवारें ... बाहर एक बोर्ड लगा हुआ था - ' माता गंधारी कला एवं विज्ञान महाविद्यालय कॉलेज बंद था।'[७] शिक्षा व्यवस्था और स्थानिय राजनीति पर व्यंग्यात्मक चित्रण किया गया है। विजय तेंदूलकर ने 'घासीराम कोतवाल' नाटक में एक्सर्ड नाटक का शिल्प अपनाया है कितु लोकनाटय शैली के तत्व अपनाकर उसे अभिनव रुप प्रधान किया है। विजय तेंदूलकर ने अपनी मूलभूत नाटय प्रेरणा के संदर्भ में लिखा है- '' नाटक सीखने में किसी स्कूल में नहीं गया उस जमाने में नाटक शीखाने के न तो कोई स्कूल थे न शिबिर। नाटकों की किताबे पढना, नाटय क्षेत्रों में खूद कुछ करके देखना, अपनी भूलों से सीखने के मार्ग थे। मित्रों के साथ चर्चा करना ही मेरे नाटक सीखने के मार्ग थे। धासीराम कोतवाल यह नाटक सबसे चर्चित ओर विवादस्पद नाटक है। विजय तेंदूलकर का नाटक सखाराम बाइण्डर जिसका अनुवाद सरोजिनी वर्मा ने किया हैं। नाटक का मूख्य पात्र सखाराम बाइन्डर है, वह हर दिन के अनुभव को जीवन मानता है। वह अतीत और भविष्य की चिंता में वर्तमान को हाथों से जाने नहीं देता। वह केवळ वर्तमान में ही जीता है।

निष्कर्ष –

प्रस्तुत नाटक के द्वारा यह संदेश है कि परिवार और समाज से कटा मनुष्य अंत में कुकर्म की ओर आकृष्ट हो जाता है, इसीलिए मनुष्य को जीवन में परिवार और समाज की अत्यंत आवश्यकता है। अनेक विषय, चिंतन को लेकर वे अपने नाटक लिखते थे, और समाज और दर्शक को संदेश देते थे, उन्होने मराठी नाट्य साहित्य समृद्ध और सशक्त बनाया है, उनका यह योगदान केवळ मराठी नाटय साहित्य के लिए न होकर समग्र

Scanned with OKEN Scanner

नाट्य जगत को एक महत्त्वपूर्ण देन है। यह सब अनुवाद के कारण ही संभव हो गया है, विजय तेंदूलकर अब भारतीय नाट्य साहित्य के रुप में हमारे सामने आते है, वह मराठी भाषा तक सीमित नही रहे है। से अनुवाद आज महत्त्वपूर्ण बन गया है, भाषा की सीमाओं को सीमित करने का कार्य अनुवाद से संभव है तथा प्रत्येक भाषा का समृद्ध साहित्य हमारे सामने आ रहा है, यह बहुत बडी उपलब्धि अनुवाद की मानी जाती है। अनुवाद की उपादेयता आज सर्वविदीत है, जिससे साहित्य का कोई भी क्षेत्र अछूता नहीं रहा अनुवाद प्रक्रिया के कारण हमें संपूर्ण विश्व का साहित्य अपना-सा लगता है। इसलिए हमें अनुवाद प्रक्रिया की कता तथा महत्त्व समझना अनिवार्य है।

संदर्भ सुची :

1. अनुवाद कला : सिद्धांत और प्रयोग, डॉ. कैलाशचंद्र भाटिया, तक्षशिला प्रकाशन नई दिल्ली - पृ.१०
2. , डॉ. भ.ह. राजूरकर डॉ. राजमल बोरा, अनुवाद क्या है, पृ.१०३
3. प्रो. ए. अच्युतन, नाटयानुवाद सिद्धांन्त और विवेचन पृ.१५
4. अखेरचा सवाल, वसंत कानेटकर पृ.५
5. अखेरचा सवाल, वसंत कानेटकर अनु. कुसूम तांबे पृ.१
6. रंग पसंग सम्मा. प्रयाग शुल्क, जुलाई सितम्बर, २००९, पृ.४७
7. उसकी जात, विजय तेंदूलकर पृ.२२

Scanned with OKEN Scanner